प्रस्तावना

साहित्य यह तब समाजोपयोगी बन जायेगा जब उसका विषय मनुष्य व समाज हो| जो साहित्य मनुष्य को अनैतिक वातावरण से बचा न सके, जो उसके मूल्यों को प्रोत्साहित न कर सके, वह वास्तव में सच्चे साहित्य की कोटि में नहीं रखा जाता| मानव, अपने में स्वतन्त्र है | वह विवेकी है| इस विवेक बुद्धि को जागरित करना, अपने कर्तव्य को पहचानना, प्रेम, त्याग, परोपकार आदि नैतिक मूल्यों को जगाना ही साहित्य का लक्ष्य होना चाहिए| जन-समूह को निराशा के गर्त से ऊपर उठाकर, उनमें आशा का संचार करना साहित्य का मूल उद्देश्य है| जीवन की वास्तविकता की उपेक्षा करके साहित्य कभी आगे नहीं बढ़ सकता| मनुष्य को देवता बनानेलायक साहित्य ही सच्चा साहित्य है इस तत्व को पूर्ण रूप से आत्मसात करनेवाले साहित्यकारों में सबसे प्रमुख है आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी| उनका साहित्य, मनुष्य की विराट गरिमा का साहित्य है| वे मनुष्य को जड़ या पशु नहीं मानते, उसे विकास की अन्तिम परिणति स्वीकार करते हैं|

हिन्दी साहित्य को अपने पांडित्यपूर्ण चिन्तन, वैदुष्यपूर्ण लेखन तथा वैदाग्ध्यपूर्ण भाषण से सर्वाधिक प्रभावित करनेवाले साहित्यकारों में आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी का स्थान सर्वोपरि है| मूल्यों के संक्रमण के युग में द्विवेदी ने भारत के हज़ारों साल पुरानी परम्परा को आत्मसात कर, अतीत के उज्जवल इतिहास को समझकर और वर्तमान समाज के जीवन्तबोध को पहचानकर जो कुछ लिखा,वह हिन्दी साहित्य जगत में कालजयी ठहरता है| द्विवेदी मूलतः आचार्य रामाचान्द्रशुक्ल्जी की परम्परा के आलोचक है| उनहोंने शुक्लजी के अनेक विचारों का खण्डन करते हुए, अपने साहित्य-संबन्धी विचारों को खुलकर प्रकट करने का साहस दिखाया है| द्विवेदी, साहित्य को किसी एक विशिष्ट काल-सीमा में बँधकर देखने के पक्ष में नहीं थे| उनके अनुसार साहित्य मानव जीवन से सीधा उत्पन्न होकर,

सीधे मानव जीवन को प्रभावित करता है| साहित्य में उन सारी बातो का जीवन्त विवरण होता है जिसे मनुष्य ने देखा है, अनुभव किया है, सोचा है, समझा है| द्विवेदी ने अपने साहित्य-सृजन की आधार शिला इसी स्वानुभूत ज्ञान की नींव पर खड़ी होकर की है |

आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी संस्कृति के पुजारी थे| अत: हमारी संस्कृति की उत्कृष्टताएँ उनकी रचनाओं में विद्यमान है| भारतीय साहित्य में संभवतः द्विवेदी एकमात्र ऐसा विचारक है जिनके अन्दर भारतीय संस्कृति तथा इतिहास की चेतना का संपूर्ण फलक अपनी समग्रता और जीवन्तता में मौजूद है| उनके साहित्य को पढ़कर लगता है मानो वे भारतीय मनीषा के जीवित प्रतिरुप है| संस्कृति की दृष्टि से आज का युग संक्रान्ति का है| इस संक्रान्तिकाल में हम अपनी मुट्ठी से उन अनमोल रत्नों को निकालने न दे, जो सहस्त्राब्दियों से हमारे पास सुरक्षित रखे हैं| द्विवेदी के अनुसार यदि मनुष्य को संस्कृति के प्रशस्त राजमार्ग पर अग्रसर होना है तो उसे बार-बार सोच –विचार कर, अपना सांस्कृतिक पथ निश्चित करना होगा| जो मनुष्य शुद्ध संस्कार, स्वतन्त्र, विमल, विवेक और समता के मार्ग पर आरूढ़ है वही सुसंस्कृत है| इस पृथ्वी पर जब तक मनुष्य और मनुष्यता जीवित रहेगी, तब तक संस्कृति का यह पावन संस्कार उसका मार्गदर्शन करता रहेगा|

संस्कृति के साथ ही साथ इतिहास तत्व भी द्विवेदी की रचनाओं में विद्यमान है| ऐतिहसिक पृष्ठभूमि को लेकर, कल्पना का समावेश करते हुए उन्होंने अपनी रचनाओं का सृजन किया है| उनके इतिहास लेखन की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इन्होंने न केवल प्राचीन पोथियों के अनुसन्धान से नये तथ्य दिये, बल्कि उनके आभाव में जो विसंगतियाँ और भ्रांतियाँ फैली हुई है, उन्हें अकाट्य तर्कों से दूर किया|

हिन्दी भाषा में 'मिथ' का प्रयोग आदि काल से ही होता आ रहा है| अपनी मानवतावादी दृष्टिकोण को व्यक्त करने तथा भारतीय इतिहास तथा संस्कृति की विशिष्टताओं को उद्घाटित करने केलिए अपनी रचनाओं में मिथकों का प्रयोग द्विवेदी ने किया है|

द्विवेदी का संपूर्ण साहित्य वर्तमान युग की संवेदनाओं को आत्मसात किये हुए, जीवन के उत्कृष्ट मूल्यों से अनुप्राणित, सुंदर भविष्य के निर्माण की पृष्ठभूमि तैयार करता है| उन्होंने 'बाणभट्ट की आत्मकथा', 'चरुचन्द्रलेख', 'पुनर्नवा', 'अनामदास का पोथा', ये चार उपन्यास लिखे है| सौ से अधिक निबन्ध भी उन्होंने लिखी| अपने साहित्य संबंधी विचार को व्यक्त करते हुए कुछ आलोचना ग्रन्थों का सृजन भी उन्होंने किया है| उनकी कहानियों की संख्या बहुत कम है, फिर भी छोटी-छोटी कहानियों के माध्यम से उन्होंने वर्तमान समाज की विसंगतियों का चित्रण किया है| द्विवेदी ने छोटी-छोटी कविताओं का सृजन किया है जिससे उनके देशप्रेम, प्रकृतिप्रेम एवं मानवप्रेम की झलक हमें मिलते हैं|

छात्र जीवन से ही द्विवेदी की रचनाओं के प्रति मेरी वेशेष रूचि रही थी| शोधाध्ययन के अवसर पर मेरे पूज्य गुरुवार डॉ. जी ने हज़ारी प्रसाद द्विवेदी पर शोध करने का सुझाव दिया| मैंने विनम्रतापूर्वक इस विषय को अनुसंधान हेतु स्वीकार किया| प्रस्तुत शोधकार्य उस विनम्र प्रयास का परिणाम है|

अध्ययन की सुविधा केलिए मैं ने इस शोध-प्रबन्ध को पाँच अध्यायों में विभाजित किया है| पहला अध्याय 'आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व' में द्विवेदी का जन्म, बचपन, शिक्षा, नौकरी, वेश-भूषा, पारिवारिक जीवन, पद-पुरस्कार आदि पर विस्तार से वर्णन किया गया है| उनके नाम की सार्थकता पर भी विचार किया है| ज्योतिषी के रूप में द्विवेदी प्रसिद्ध थे| लेकिन अध्यापक बनना उनके जीवन की कमना थी| संस्कृत भाषा से उनका जो लगाव था, अंग्रेज़ी भाषा के

अध्ययन में उन्होंने जिन कठिनाइयों का सामना किया, इन सभी का, प्रथम अध्याय में वर्णन किया गया है| विश्व कवि रविन्द्रनाथ ठाकुर तथा शान्तिनिकेतन ने द्विवेदी के जीवन में कहाँ तक प्रभावित किया और अन्य महान व्यक्तियों का प्रभाव उनके जीवन में कौन-कौन सा परिवर्तन लाया इन सभी का परिचय प्रस्तुत अध्याय से मिलता है| द्विवेदी ने कुल चार उपन्यास की रचना की है और सौ से अधिक निबन्ध भी लिखे है| उनकी समीक्षा, इतिहास ग्रन्थ, कहानियाँ, कविता, पत्र-पत्रिकाएँ जैसे संपूर्ण रचनाओं की खोज पहले अध्याय में किया गया है|

दूसरा अध्याय "इतिहास-संस्कृति, मिथक-एक विश्लेषण" इन तीन तत्वों के शब्दार्थ, व्युत्पत्ति, परिभाषा, स्वरूप आदि पर विचार करते हुए, उनका विस्तार से विवेचन किया है|संस्कृति की परम्परा के क्रम में सभ्यता और संस्कृति के स्वरूप पर चिन्तन –मनन करके, इतिहास की परम्परा को ग्रहण करते हुए, उसे पौराणिकता के सन्दर्भ में देखा गया गया है|

तीसरा अध्याय 'आचार्य हज़ारी प्रसाद द्विवेदी के कथा –साहित्य में इतिहास संस्कृति एवं मिथक' में द्विवेदी के चार उपन्यासों की क्थावस्तु का संक्षिप्त वर्णन देते हुए उसमें इतिहास, संस्कृति और मिथक को ढूँढने की चेष्टा की है| साथ-ही-साथ उनकी कहानियों का विश्लेषणात्मक अद्ययन करते हुए, उसकी प्रासंगिकता पर विचार किया है|

चौथा अध्याय 'आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के निबब्धों में इतिहास- संस्कृति एवं मिथक' में द्विवेदी के पच्चास से अधिक निबंधों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करते हुए उसमें इतिहास, संस्कृति एवं मिथकों को ढूँढ़ निकलने का प्रयास हुआ है|

पाँचवाँ अध्याय 'भाषा एवं शैली' में भाषा की परिभाषा देते हुए साहित्य में भाषा की भूमिका पर विचार किया है| द्विवेदी की सारी रचनाओं में प्रयुक्त भिन्न

भाषा प्रयोगों तथा भिन्न-भिन्न शैलियों का इसमें विस्तार से वर्णन किया गया है| 'उपसंहार' में आचार्य द्विवेदी की रचनाओं की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए स्थापित किया है कि उनकी सारी रचनाएँ बिलकुल प्रासंगिक है| आज का समाज कई तरह की विभीषिकाओं का सामना कर रहा है| प्रेम, करुणा, भाईचारा आदि मूल्य समाज से नष्ट हो रहा है| द्विवेदी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से, मनुष्य को पशुत्व से उपर उठाकर, जिस प्रकार उनमें देवत्व प्रदान करने का प्रयास किया है, इसपर विस्तार से विचार किया गया है| अपने अद्देश्य की पूर्ति केलिए द्विवेदी ने अपनी रचनाओं में इतिहास –संस्कृति एवं मिथक तत्वों का समावेश किस प्रकार किया है, इसका वर्णन भी उपसंहार का विषय बना है|

इस शोध प्रबन्ध की तैयारियाँ ईश्वर की असीम कृपा से संपन्न हुई है| पहले मैं उनके सामने नतमस्तक हूँ| मेरे माता-पिता को स अवसर पर मैं प्रणाम अर्पित करती हूँ| मेरे प्रिय पति और प्यारी बेटी, इस शोध कार्य के आरंभ से अंत तक मेरे साथ देता रहा, उनसे मैं क्या धन्यवाद दूँ|

इस शोध प्रबन्ध के विषय चयन से लेकर सभी प्रारंभिक तैयारियाँ, महाराजास कॉलेज, एरणाकुलम के हिन्दी विभाग के प्रोफेसर डॉ. शाशिदेवन जी के निदेशन में संपन्न हुआ था| अकाल में मृत्यु की गोद में पड़े सर को मैं आदर के साथ याद करती हूँ|

डॉ. प्रणीता जी, जो महाराजास कॉलेज, एरणाकुलम के हिन्दी विभाग की प्राध्यापिका है, उनके निदेशन में इस शोधकार्य का अंतिम प्रारूप हुआ है| उनकी प्रेरणा, मार्गदर्शन, प्रेमपूर्वक व्यवहार के कारण ही मैं अपना कार्य पूर्ण कर स्की हूँ| उनके प्रति मैं सदैव आभारी रहूँगी|

महाराजास कॉलेज, एरणाकुलम के प्रिंसिपल डा. वर्गीस एब्राहम और विभागाद्यक्षा डॉ. भासुरामणी जी के सहयोग से ही इस कार्य पूर्ण कर स्की हूँ| इस अवसर पर मैं उनसे धन्यवाद अदा करती हूँ|

डॉ. जलजा जी, जो महाराजास कॉलेज, एरणाकुलम के पूर्व विभागाध्यक्षा थी उनसे मैं अपनी कृतज्ञता प्रकट करती हूँ| हिन्दी विभाग के अन्य गुरुजनों के प्रति मैं अपने दिल से आभार प्रकट करती हूँ|

मेरे बंधुजनों को तथा मेरी सहेलियों को मैं इस अवसर पर धव्यवाद देती हूँ|

प्रबन्ध लेखन केलिए आवश्यक सामग्री महाराजास कॉलेज लैब्ररी, कोचीन विस्वविद्यालय, पब्लिक लैब्ररी एरणाकुलम, चंगाम्पुषा लैब्ररी इटपल्ली, एम् .जी यूनिवर्सिटी लैब्ररी, दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा एरणाकुलम से प्राप्त हुई है| वहाँ के पुस्तकालय अधिकारीयों के प्रति मैं विशेष रूप से कृतज्ञ हूँ|

इस शोध प्रबन्ध का सारे टाइपिंग का कार्य श्रीमति. ऐश्वर्या जोर्ज जी ने की है| उनसे मैं अपना धन्यवाद प्रकट करती हूँ|

द्विवेदी के महत्वपूर्ण रचनाओं का अद्ययन करके, उसमें इतिहास, संस्कृति तथा मिथक को ढूँढने का यह मेरा विनम्र प्रयास है| अपनी क्षमता की सीमा में रहकर ही मैं ने इस कार्य की पूर्ति की है| प्रस्तुत कार्य की पूर्ति केलिए जिन व्यक्तियों से सहयोग मिला है, उन सभी को धन्यवाद अर्पित करते हुए मैं अपना यह शोध प्रबन्ध समर्पित करती हूँ|

सधन्यवाद